✡ राज्य के तत्त्व : सप्तांग सिद्धान्त ✡

कौटिल्य ने पश्चात्य राजनीतिक चिन्तकों द्वारा प्रतिपादित राज्य के चार आवश्यक तत्वों - भूमि, जनसंख्या, सरकार व सम्प्रभुता का विवरण न देकर राज्य के सात तत्वों का विवेचन किया है। इस सम्बंध वह राज्य की परिभाषा नहीं देता है, किन्तु पहले से चले आ रहे सप्तांग सिद्धान्त का समर्थन करता है। कौटिल्य ने राज्य की तुलना मानव-शरीर से की है तथा उसके सावयव रूप को स्वीकार किया है। राज्य के सभी तत्त्व मानव अंग के समान परस्पर संबंधित हैं अन्तर्निर्भर तथा मिल-जुलकर कार्य करते हैं -

स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोशदण्डमित्राणि प्रकृतयः ॥ अर्थशास्त्र 06.1.01 ॥

(1) स्वामी (राजा) शीर्ष के तुल्य है। वह कुलीन बुद्धिमान, साहसी, धैर्यवान, संयमी दूरदर्शी तथा युद्ध-कला में निपुण होना चाहिए। जिसप्रकार शरीर का संचालन शीर्ष द्वारा होता-

(2) अमात्य (मंत्री) राज्य की आँखें हैं। इस शब्द का प्रयोग कौटिल्य ने मंत्रीगण, सचिव, प्रशासनिक व न्यायिक पदाधिकारियों के लिए भी किया है। वे अपने ही देश के जन्मजात नागरिक, उच्च कुल से सम्बंधित, चरित्रवान, योग्य, विभिन्न कलाओं में निपुण तथा स्वामीभक्त होने चाहिए।

(3) जनपद (भूमि तथा प्रजा या जनसंख्या) राज्य की जंघाएँ अथवा पैर हैं, जिनपर राज्य का अस्तित्व टिका है। कौटिल्य ने उपजाऊ, प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण, पशुधन, नदियों, तालाबों तथा वन्य प्रदेश प्रधान भूमि को उपयुक्त बताया है। जनसंख्या में कृषकों, उद्यमियों तथा आर्थिक उत्पादन में योगदान देने वाली प्रजा सम्मिलित है। प्रजा को स्वामीभक्त, परिश्रमी तथा राजा की आज्ञा का पालन करने वाला होना चाहिए।

PRIORITY APPOINTMENTS NOTES

(4) दुर्ग (किला) राज्य की बाहें हैं, जिनका कार्य राज्य की रक्षा करना है। राजा को ऐसे किलों (दुर्गों) का निर्माण करवाना उपयुक्त चाहिए जो आक्रामक युद्ध हेतु तथा रक्षात्मक दृष्टिकोण से लाभकारी (प्रयोग में लाया जा सके) हो। कौटिल्य ने चार प्रकार के दुर्गों - औदिक (जल) दुर्ग, पर्वत (पहाड़ी) दुर्ग, वन (जंगली) दुर्ग, धन्वन (मरुस्थलीय) दुर्ग का वर्णन किया है।

(5) कोष (राजकोष) राज्य के मुख के समान है। कोष को राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है, क्योंकि राज्य के संचालन तथा युद्ध के समय धन की आवश्यकता होती है। कोष इतना प्रचुर होना चाहिए कि किसी भी विपत्ति का सामना करने में सहायक हो। कोष में धन वृद्धि हेतु कौटिल्य ने कई उपाय बताए हैं। संकट काल में राजस्व हेतु प्राप्ति हेतु वह राजा को अनुचित तरीके अपनाने की भी सलाह देता है।

(6) दण्ड (बल, डण्डा या सेना) राज्य का मस्तिष्क है। प्रजा तथा शत्रु पर नियंत्रण करने के लिए बल अर्थात सेना अत्यधिक आवश्यक तत्व है। कौटिल्य ने सेना के छः प्रकार बताए हैं। जैसे - वंशानुगत सेना, वेतन पर नियुक्त या किराए के सैनिक, सैन्य निगमों के सैनिक, मित्र राज्य के सैनिक, शत्रु राज्य के सैनिक तथा जातिवादी सैनिक। संकट काल में वैश्य तथा शूद्रों को भी सेना में भर्ती किया जा सकता है। सैनिकों को धैर्यवान, दक्ष युद्ध कुशल तथा राजभक्त होना चाहिए। राजा को भी सैनिकों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखना चाहिए। कौटिल्य ने दण्ड नीति के चार लक्ष्य बताए हैं - अप्राप्य वस्तु को प्राप्त करना, प्राप्त वस्तु की रक्षा करना, रक्षित वस्तु का संवर्द्धन करना तथा संवर्द्धित वस्तु को उचित पात्रों में बाँटना।

(7) सुहृद (मित्र) राज्य के कान हैं। राजा के मित्र शान्ति व युद्ध काल दोनों में ही उसकी सहायता करते हैं। इस संबंध में कौटिल्य सहज (आदर्श) तथा कृत्रिम मित्र में भेद करता है। सहज मित्र कृत्रिम मित्र से अधिक श्रेष्ठ होता है। जिस राजा के मित्र लोभी, कामी तथा कायर होते हैं, उसका विनाश अवश्यम्भावी हो जाता है।

इस प्रकार कौटिल्य का राज्य संबंधी सप्तांग सिद्धान्त राज्य के सावयव स्वरूप (Organic form) का निरूपण करते हुए सभी अंगों तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। यद्यपि यह सिद्धान्त राज्य की आधुनिक परिभाषा से मेल नहीं खाता, किन्तु कौटिल्य के राज्य में आधुनिक राज्य के चारों तत्व विद्यमान हैं। जनपद भूमि व जन संख्या है, अमात्य सरकार का भाव है तथा स्वामी (राजा) सम्प्रभुता का प्रतीक है। कोष का महत्व राजप्रबंध, विकास व संवर्धन में है तथा सेना आन्तरिक शान्ति व्यवस्था तथा बाहरी सुरक्षा के लिए आवश्यक है। विदेशी मामलों में मित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, किन्तु दुर्ग का स्थान आधुनिक युग में सुरक्षा-प्रतिरक्षा के अन्य उपकरणों ने ले लिया है।